International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(4): 176-179

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(4): 176-179
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-05-2022
Accepted: 24-06-2022

डॉ. कुशम लता
संस्कृत–विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कुशम लता
संस्कृत–विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पू : काव्य में पात्र–योजना

डॉ. कुशम लता

प्रस्तावना

प्रत्येक काव्यकार, नाटककार एवं रचनाकार के लिए कथावस्तु, पात्र और रस इन तीन तत्त्वों का समुचित निर्वाह करना आवश्यक होता है। कवि के उद्देश्य को मूर्तरूप देने वाली वस्तु से जिस व्यक्ति का सीधा सम्बन्ध होता है उसे पात्र कहा जाता है। नाट्यशास्त्र के अनुसार चम्पूकाव्य में तीन तत्त्व प्रमुख होते है – वस्तु, नेता और रस। चम्पूकाव्य की वस्तु को रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए पात्रों की योजना की जाती है। पात्रों के अभाव में कवि की रचना निर्जीव ही मानी जाएगी। अतः चम्पूकाव्य को सजीव सरस और लोकप्रिय बनाने के लिए चम्पू काव्य में उच्च कोटि के पात्रों को चयनित करना चाहिए। काव्य का प्रमुख पात्र नायक होता है। काव्य कथावस्तु को जो विकास की ओर ले जाता है वह नायक कहलाता है।

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पू' काव्य में कवि जयनारायण यात्री ने 'पात्र–योजना' के अन्तर्गत प्रमुख पुरुषपात्रों तथा अन्य पुरुष पात्रों का वर्णन किया है। इसी प्रकार स्त्री–पात्रों में प्रमुख स्त्री–पात्रों तथा अन्य स्त्री–पात्रों का चरित्र–चित्रण किया गया है।

पुरुष–पात्र

प्रमुख पात्र तथा अन्य पात्र

शान्तनु

प्रस्तुत चम्पू काव्य 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में शान्तनु नायक की भूमिका में है। संस्कृत साहित्यशास्त्र में आचार्य भरत ने सर्वप्रथम नायक के चार भेद[1] बताए हैं – 1. धीरोद्धत, 2. धीरललित, 3. धीरोदात्त, 4. धीरप्रशान्त।

नायक उच्चवंश में उत्पन्न प्रतापी, गुणवान्, और राजर्षि पुरुष इनमें से धीरोदात्त होता है।[2]

नाट्यदर्पण में धीरोदात्त नायक अति गम्भीर, न्यायप्रिय, सत्त्वगुणप्रधान, क्षमाशील एवं स्थिर बुद्धिवाला बताया गया है।[3]

दशरुपक में धीरोद्धत नायक घमण्डी, ईर्ष्यालु, चंचल मनोवृत्ति वाला, क्रोधी तथा आत्मप्रशंसापरक भावों से युक्त होता है।[4]

धीरललित नायक वह होता है जो सर्वथा निश्चिन्त रहता है, जिसका स्वभाव कोमल होता है, और जो सदैव सुख का अनुभव करता है। ऐसी कलाओं में आसक्त नायक धीरललित होता है।[5]

दशरुपककार ने लिखा है कि जो त्याग आदि सामान्य गुणों से युक्त हो, उच्च कुल में उत्पन्न ब्राह्मण आदि हो ऐसा नायक धीरप्रशान्त नायक कहलाता है।[6]

इस चम्पू के अष्टम परिच्छेद में राजा शान्तनु की सुन्दरता के विषय में इस प्रकार से बताया गया है।

> कनककिरीटशोभितशीर्षः, कौशेयवसनदेदीप्यमानतनुः, सुवर्णाभरणसुसज्जितशरीर, स्तारुण्यलावण्यविभासितकायो द्रुतहाटकलेवरणवर्ण, श्चन्द्रचारुवदनाभो, विभावसु रिव प्रदीप्तालो वृष भांसः पीनवक्षा, आजानुबाहु।[7]

अर्थात् वह राजा शान्तनु सोने के मुकुट से शोभित सिर वाला, रेशमी कपड़ों से जिसका शरीर चमक रहा है, सोने के गहनों से सजे हुए, शरीर वाला, जवानी की सुन्दरता से शोभायमान, पिघले हुए सोने के समान रंगवाला, चंद्रमा के समान मुख की कान्ति वाला, सूर्य के समान जिसका मस्तक चमक रहा है, बैल के समान कन्धों वाला, चौड़ी छाती वाला, घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाला है। इससे स्पष्ट है कि वह बलशाली और सुन्दर है।

शिक्षामन्त्री से शिक्षा के विषय में जानकारी प्राप्त करके वह शिक्षा के विषय में इस प्रकार से कहता है कि
यथा –

असंस्कृतः प्रस्तरः पर्वताद् यथा
विजायते बालको मातृगर्भतः।
स कृष्णमूर्ति र्यदाकारुपाणिना, न
मन्ति लोका विबोध्यामु मीश्वरम्।।[8]

अर्थात् जैसे पत्थर पहाड़ से बिना सुधरा हुआ निकलता है वैसे ही बालक भी माता के गर्भ से बिना सुधार के अर्थात् अशिक्षित पैदा होता है। उस पत्थर को जब कारीगर के द्वारा भगवान की मूर्ति का रूप दे दिया जाता है तब लोक उसको ईश्वर समझकर प्रणाम करते हैं। वैसे ही माता के गर्भ से पैदा हुआ बालक गुरु से पढ़ाया हुआ शिक्षित तथा विद्वान् हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि शान्तनु शिक्षा की महत्ता को सम्यक्रूपेण समझता है।
इस चम्पू में पति पत्नी के प्रेम को स्वर्ग समान बताया गया है।
यथा –

चेद् भर्त्तृभार्ययोः प्रीत्या, जीवनं याति सर्वदा।
स्वर्ग स्तत्रैव वक्तव्यः कुत्राप्यन्यत्र नास्ति सः।।[9]

अर्थात् पति और पत्नी का जीवन यदि प्यार से गुजरता है तो वही स्वर्ग के तुल्य है। इससे ज्ञात होता है कि शान्तनु दाम्पत्य जीवन की महत्ता को भली प्रकार समझता है।
देवी गंगा को गर्भवती जानकर राजा को बहुत प्रसन्ता होती है। तब समय चक्र से उस गंगा ने दिव्य गुणों से युक्त कुमार को जन्म दिया और उसी समय उसने उसे गहरे पानी में फेंक दिया। इस प्रकार प्रथम वसु को शाप से मुक्त कर देती है।[10] ऐसे ही उस गंगा ने सात बालकों को जन्म देकर अपने पानी में बहाकर शापमुक्त कर दिया। आठवाँ पुत्र उत्पन्न होने पर गंगा उसको भी पानी में फेंकने के लिए उद्यत हुई। राजा ने वंश परम्परा को नष्ट होते देखकर गंगा से पुत्र की याचना की। परन्तु गंगा उसकी प्रार्थना की अवहेलना करके गंगा में बहाने के लिए उद्यत होती है। इस प्रकार राजा क्रुद्ध हो जाता है और कहता है कि यथा –

जगति न क्वचिदीदृगवेक्षिता
करुणया रहिता सुतघातुका
हृदयमेवन केवल मश्मनः
समकलेवरमेव विनिर्मितम्।।[11]

अर्थात् संसार में ऐसी दया से हीन और पुत्र को मारने वाली (स्त्री) कहीं नहीं देखी। इसका केवल हृदय ही पत्थर का नहीं है, बल्कि सारा शरीर ही पत्थर का बना हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि राजा पुत्र की महत्ता को भलीप्रकार से समझता है, क्योंकि पुत्रहीन का घर सूना होता है।
राजा शान्तनु प्रिय पत्नी की वियोग में विलाप करता है। वह मन ही मन विचार करता है कि –

विस्मरेद् भ्रातरं तातं स्वसारं मातरं सुतम्।
भार्याविस्मरणं पुंसे कठिनं पुरु वर्तते।।[12]

अर्थात् भ्राता, पिता, बहिन, माता एवं पुत्र को भूल जाए परन्तु मनुष्य के लिए स्त्री का भूलना बहुत कठिन है।
प्रस्तुत चम्पू काव्य से ज्ञात होता है कि राजा शान्तनु शान्त एवं धार्मिक प्रकृति का नायक है। अतः नायक के सभी गुण उसमें विद्यमान हैं।

ब्रह्मा

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में ब्रह्मा देवताओं और मुनियों की सभा में अध्यक्ष के रूप में विद्यमान है। अध्यक्ष का सभा में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। सभा का संचालन अध्यक्ष के द्वारा ही किया जाता है। इस चम्पू में ब्रह्मा कुशल, शास्त्रनिपुण तथा यथार्थद्रष्टा अध्यक्ष हैं।
यथा –

तस्यां समित्यां मुनयः पठन्ति, स्वरेण वेदान् मधुरेण भूरि।
दिदेव वेधा इव भान्तराले, पूर्णेन्दु रेतं विबुधा भजन्ति।।[13]

अर्थात् उस सभा में मुनि बहुत मीठे स्वर से वेद पढ़ रहे हैं, उस सभा में ब्रह्मा ताराओं के बीच में पूरे चन्द्रमा की तरह चमक रहा है और देवता उनकी सेवा कर रहे हैं।

महाभिष

'भीष्मप्रतिक्षा चम्पूः' के प्रथम परच्छिेद में राजा महाभिष का वर्णन इस प्रकार से किया गया है –
अपि च

असित गहनमेघै रावृतस्यापि तेजः,
प्रथयति खलु भानो र्वासरे स्वप्रकाशम्।
वियति च वसुमत्यां का कथाऽनावृतस्य
नरपति रय मेवं सर्वदेवेषु भाति।।[14]

अर्थात् जिस प्रकार घने बादलों के बीच सूर्य का तेज आकाश और भूमि पर अपना प्रकाश फैलाता है, उसी प्रकार वह महाभिष सब देवताओं में सूर्य की तरह प्रकाशमान् हो रहा था।
प्रस्तुत चम्पू काव्य से विदित होता है कि वह अत्यन्त तेजस्वी, दानशील, धर्मपरायण तथा तपस्वी राजा था।

अष्टवसु

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के प्रथम परिच्छेद में अष्टवसुओं का वर्णन प्राप्त होता है जब गंगा स्वर्ग से मृत्युलोक की ओर आ रही थी तो रास्ते में उसने देवतापन से रहित, मलिन मुख वाले आठ वसुओं को देखा तथा उनके मृत्युलोक में जाने का कारण पूछा।[15]
वसुओं ने गंगा को प्रणाम करके वसिष्ठ मुनि के सन्ध्या समय में उनके (वसुओं) द्वारा अतिक्रमण करने तथा मुनि द्वारा शाप देने की बात बतलाई। वसुओं ने गंगा से प्रार्थना करते हुए कहा है माता! आप मृत्युलोक में किसी मनुष्य की पत्नी बनकर हमें अपने पुत्र के रूप में जन्म दो। क्योंकि
यथा –

मानवी पंकपंकेन लिप्ता भवति सर्वदा।
अतएवोदरंतस्या जननि। नो न रोचते।।[16]

अर्थात् मनुष्य की स्त्री सदा पापरूपी पंक से लिप्त रहती है। इसलिए हम उसके पेट से जन्म नहीं लेना चाहते।

प्रतीपक

इस चम्पू काव्य में प्रतीपक राजा की भूमिका में है। राजा प्रतीपक को जब पुत्र की प्राप्ति होती है तो वह श्रीकृष्ण से प्रार्थना करता है कि
यथा –

य स्त्यक्ताश स्तनयजनुषो नाथ तस्मै प्रदाय
पुत्रंशौरे! हरित मकरोः शुष्कधान्यस्य वप्रम्।
भूयो भूय श्चरणपतितो माधव! त्वां नमामि,
तद्दीर्घायुः कुरु करुणया प्रार्थनेयं मदीया।।[17]

शतभिषा नक्षत्र के दूसरे चरण में पैदा होने के कारण राजपुरोहित उसका नाम शान्तनु रखता है।

नारद

इस चम्पू काव्य में नारद का प्रवेश द्वितीय परिच्छेद में होता है। इस चम्पू काव्य में नारद का वर्णन इस प्रकार से किया गया है –

> करकमलधृतकलवीणः पुष्कर स्पृशन्तीवोन्नताशिखा यस्य शीर्ष शोभिता नारायणाख्या पूतवक्त्राम्बुजो दुग्ध धवल वसन विभासित कलेवरो नारायणनारायण मिति निनादेन राजसभां गुञ्जयन् देवर्षिनारद स्तस्य राजपरिषदि स्वपादपद्मे निदधौ।[18]

प्रस्तुत चम्पू काव्य में नारद प्रतीपक के गुरु के रूप में वर्णित है।

देवव्रत

'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में देवव्रत शान्तनु के पुत्र की भूमिका में है। इस चम्पू के दशम परिच्छेद में देवव्रत के विषय में इस प्रकार से कहा गया है –

> यत् किञ्चित् सुरगुरु बृहस्पति र्वेद, तत् समस्त मस्य जिह्वाग्रे वर्तते। शुक्राचार्य इव नीतिदक्षः, समरनिष्णतोमहान् धनुर्धरो विद्यते। समरांगणे पुरंदरेणाऽप्य जेयोऽस्ति।[19]

अर्थात् वह देवताओं के समकक्ष तथा बृहस्पति के समान प्रखर बुद्धि वाला है। शुक्राचार्य की तरह नीतियों में निपुण है। युद्ध में एक कुशल धनुर्धर है। वह युद्ध में कभी भी पराजय का मुख नहीं देख सकता है।

देवव्रत अत्यन्त दयालु स्वभाव वाला है। वह अपने पिता के प्रति निष्ठावान् है। वह अपने पिता के सुख के लिए प्राप्त हुए वंशानुगत राज्य को भी छोड़ देता है तथा आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पालने करने की भीष्मप्रतिज्ञा करता है।

परशुराम

इस चम्पू काव्य में परशुराम देवव्रत के गुरु के रूप में वर्णित है। गंगा देवव्रत को अपना शिष्य बनाने के लिए परशुराम से इस प्रकार प्रार्थना करती है –

अपि च

> भवत्समो नायुधशास्त्रवेत्ता
> कोऽपीह साधो! द्विजवंश भानो!
> करोतु बालं कृपया स्वशिष्यं
> यञ्चा ममेयं सुधियां वसिष्ठ![20]

अर्थात् हे सज्जन शिरोमणी तथा कुलदीपक। इस संसार में आप के समान शास्त्रविद्या में निपुण कोई नहीं है। हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ! कृपा करके आप इसे अपना शिष्य बना लो, गंगा परशुराम से ऐसी प्रार्थना करती है।

दाशराज

केवटराज सत्यवती के पिता की भूमिका में है। वह अपनी झोंपड़ी में आए हुए राजा शान्तनु का स्वागत करता है। राजा के कन्या की मांग करने पर वह अपनी पुत्री के पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी बनाने की शर्म रखता है और कहता है कि –

यथा –

> स्वसन्ततिश्वोऽभिलषन्ति सर्वे
> याञ्चा मदीयाऽनुचिता न वीर!
> राज्यं सुतापुत्रकृते प्रदातुं
> भवान् प्रतिज्ञां कुरुतां कुमार।।[21]

अर्थात् सभी अपनी संतान का कल्याण चाहते हैं। हे वीर! मेरी माँग अनुचित नहीं है। हे कुमार! मेरी लड़की के पुत्र के लिए राज देने की प्रतिज्ञा करो।

इससे विदित होता है कि दाशराज बहुत हठी है। देवव्रत कहता है कि निषादराज यदि तुम्हारी आपत्ति का कारण यही है तो मैं वचन देता हूँ कि आपकी पुत्री का पुत्र ही राजा होगा मैं नहीं। पितृभक्त देवव्रत ने दूसरी प्रतिज्ञा गम्भीर स्वर में कही – मैं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूँगा, विवाह नहीं करवाऊँगा। यह सुनकर निषाद उसके पैरों पर गिर जाता है।[22] युवराज देवव्रत के राज्य का उत्तराधिकारी न बनने और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने की प्रतिज्ञा करने पर वह अपनी पुत्री को राजा शान्तनु के लिए दे देता है।

स्त्री पात्र

संस्कृत काव्यों में नायक के पश्चात् द्वितीय स्थान नायिका का होता है। भारतीय नाट्यशास्त्र के आचार्यों ने नायक की पत्नी अथवा प्रेमिका को काव्य की नायिका के रूप में मान्यता दी है। दशरूपककार ने नायिका के तीन भेद बताए हैं। स्वकीया, अन्या (परकीया) और साधारण स्त्री।[23] आचार्य विश्वनाथ ने भी नायिका के यही तीन भेद स्वीकार किए है।[24]

प्रमुख स्त्रीपात्र तथा अन्य (स्त्री–पात्र)

गंगा प्रस्तुत चम्पू काव्य में गंगा नायिका की भूमिका में है। इस चम्पू काव्य के प्रथम परिच्छेद में गंगा का वर्णन इस प्रकार से किया गया है –

यथा –

> नखशिखकाञ्चनीया लंकारालंकृता, तेषां शिञ्जितेना
> कृष्टसमस्तमानसा, क्षौमांशुकै र्विद्युदिव विद्योतमाना,
> जघनगौरवान्मन्द गामिनी गजगामिनी, निजानन
> प्रभामन्दीकृतनिशाकरा, शुचिस्मित दृश्यमान पयः सित दन्तावलिः।[25]

अर्थात् उसका शरीर सोने के गहनों से सजा हुआ है। वह रेशमी कपड़े पहने हुए बिजली की तरह चमक रही है। जांघें भारी होने के कारण हाथी की तरह चलती है। अपने मुख की कान्ति से जिसने चन्द्रमा को भी मन्द कर दिया है। उसकी पवित्र मुस्कान से दूध सी सफेद दांतों की पंक्ति दिखाई दे रही है।

सत्यवती इस चम्पू काव्य में सत्यवती नायिका की भूमिका में है। वह निषादराज की पुत्री है। वह अनिन्द्य सुन्दरी है। राजा शान्तनु सत्यवती को देखकर उस पर मोहित हो जाता है।

यथा –

> दमन मति कठोरं चेतसो वीक्ष्य वामां
> तदपि लघु पुमांसं चञ्चला जायते च।
> भवति विजनदेशः संगमार्थ सहायः
> मुहुरपि धृतिमन्तो धारणां न त्यजन्ति।।[26]

अर्थात् स्त्री को देखने के बाद मन को दबाना कठिन है। वह स्त्री भी पुरुष को देखकर काम से पीड़ित हो जाती है। एकान्त स्थान संगम के लिए सहायक होता है, फिर भी धैर्यशाली लोग मर्यादा को नहीं छोड़ते।

यहाँ दोनों के धैर्यशाली होने का संकेत मिलता है।

रम्भा

इस चम्पू काव्य में रम्भा स्वर्गलोक की अप्सरा है। वह अनिन्द्य सुन्दरी है। उसकी आँखें चन्द्रमा की किरणों के समान उज्ज्वल हैं। जब राजा प्रतीक गंगा तट पर तपस्या करता है तो स्वर्गलोक के स्वामी इन्द्र के कहने पर वह तपस्या भंग करने के लिए तैयार हो जाती है और कहती है कि –

नारीकटाक्षविशिखं सहते भवे को
मर्त्यो विलोक्य रमणीं द्रवति क्षणेन।
मत्तांश्चकार यतिदान्तमुनीन् पुरेयं
भुक्तांगनाक्षितिपतेः कथनं किमस्ति।।[21]

इससे ज्ञात होता है कि वह अत्यन्त लावण्यवती है। अतः वह स्त्री भोग करने वाले राजा की तपस्या को भंग करने का कार्य तुच्छ समझती है।

चतुरिका प्रस्तुत चम्पू काव्य 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के अनुसार राजा के द्वारा रानी की सेवा में नियुक्त की गई चार सेविकाओं में से चतुरिका प्रमुख सेविका के रूप में वर्णित है। वह दिन रात–दिन रानी की सेवा करती है।[28] वही रानी को उदास देखकर स्वयं भी दुःखी हो जाती है। इससे ज्ञात होता है कि वह रानी से बहुत स्नेह करती है।

निष्कर्ष

ऊपरलिखित विवरण से स्पष्ट है कि कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' काव्य में 'पात्र–योजना' का बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। 'पात्र–योजना' में पुरुष पात्रों में प्रमुख पुरुष पात्र शान्तनु तथा अन्य पुरुष पात्रों में ब्रह्मा, अष्टवसु, प्रतीपक, नारद, देवव्रत, परशुराम, दाशराज का वर्णन प्राप्त होता है। स्त्री पात्रों में प्रमुख स्त्री–पात्र गंगा तथा अन्य स्त्री पात्रों में सत्यवती, रम्भा आदि का वर्णन प्राप्त होता है जो कि काफी रोचक है। अतः शोध–कर्त्री को पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध–कार्य अन्य अनुसंधानकर्त्ताओं को एतादृष विषय पर अनुसंधान करने हेतु प्रेरित करेगा।

सन्दर्भ–सूची

1. नाट्यशास्त्र, 34.18–20
2. साहित्यदर्पण, 6.9
   प्रख्यातवंशो राजर्षिधीरोदातः प्रतापवान्।
   दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नानायको मतः।।
3. नाट्यदर्पण, 1.8
   धीरोदात्तोऽतिगम्भीरः न्यायी सत्त्वी क्षमीस्थिरः।।
4. दशरूपक, 2.5
5. वही, 2.3
   निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।।
6. वही, 2.4
   सामान्यगुणयुक्तस्तु शीरशान्तो द्विजादिकः।।
7. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, अष्टम परिच्छेद, पृष्ठ 146
8. वही, 8.3
9. वही, 8.17
10. वही, अष्टम परिच्छेद, पृष्ठ 153
11. वही, 8.22
12. वही, 9.14
13. वही, 1.3
14. वही, 1.5
15. वही, प्रथम परिच्छेद, पृष्ठ 16
16. वही, 1.15
17. वही, 5.9
18. वही, द्वितीय परिच्छेद, पृष्ठ 30
19. वही, दशम परिच्छेद, पृष्ठ 178
20. वही, 9.5
21. वही, 11.14
22. वही, एकादश परिच्छेद, पृष्ठ 202–203
23. दशरुपक, 2.15
    स्वान्या साधारणस्त्रीति तद्गुणा नायिका त्रिधा।
24. साहित्यदर्पण, 3.56
    अथ नायिका त्रिभेदा स्वान्या साधारणयी स्त्रीति।
25. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पू, प्रथम परिच्छेद, पृष्ठ 10–11
26. वही, 10.15
27. वही, 3.5